अनुवाद के सिद्धांत : परंपरागत एवं आधुनिक दृष्टिकोण

Principles of Translation: Traditional & Modern Approaches

विनोद संदलेश

संयुक्त निदेशक, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो

प्रस्तावना (Introduction)

अनुवाद एक भाषा की सामग्री को किसी दूसरी भाषा की सामग्री में अंतरित (transfer) करने का माध्यम है। अनुवाद मौलिक लेखन नहीं है, बल्कि मौलिक लेखन पर आधारित एक रचनात्मक साहित्यिक विधा है, शिल्प है, विज्ञान है और अनुसृजन है। वह भाषांतरण की एक प्रक्रिया है। आधुनिक युग में अनुवाद के बिना मानव जाति का विकास असंभव है। अनुवाद के कारण ही हम आज आधुनिक विश्व समाज या वैश्वीकरण (globalisation) की सोच तक पहुंचे हैं। तथापि, अनुवाद मानव जीवन की महती आवश्यकता होते हुए भी, इतिहास में अनुवाद और अनुवाद की प्रक्रिया से जुड़े लोगों को दोयम दर्जे का स्थान ही मिला है। मोटे तौर पर, अनुवाद के बारे में निम्नलिखित दो दृष्टिकोण सामने आते हैं :

1. परंपरागत दृष्टिकोण (traditional approach) और
2. आधुनिक दृष्टिकोण (modern approach)

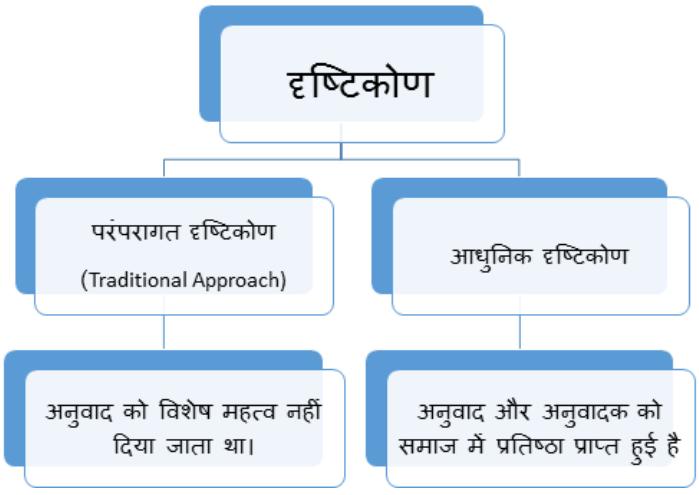

1. परंपरागत दृष्टिकोण (Traditional Approach)

पहले अनुवाद को विशेष महत्व नहीं दिया जाता था और न ही अनुवादक को अच्छी दृष्टि से देखा जाता था। इतालवी कहावत के अनुसार, उन्हें प्रवंचक माना जाता था (Translators are traitors)। प्रायः, लोग यह मानते थे कि जो लोग मौलिक लेखन (creative

writing) नहीं कर सकते, वे अनुवादक हो जाते हैं। सर जॉन डेनहैम (Sir John Denhelm) ने अनुवादकों की इस स्थिति के बारे में लिखा है:

Such is our pride, our folly or our fate,

That few, but such as cannot write, translate.

कुछ लोग अनुवाद की सत्ता को नकारते हैं (there is no such thing as translation - J. lewis May) और कुछ अनुवाद की सत्ता को स्वीकार तो करते हैं, लेकिन अनुवाद को असंभव कार्य मानते हैं (All translations seem to me simply an attempt to accomplish an impossible task - Wilhelm)। यही नहीं, कुछ लोग अनुवाद कार्य को मौलिक रचना में हस्तक्षेप समझते हैं (Translation is meddling with inspiration - Grant Showerman), तो कुछ का कहना है कि अनुवाद तो किया जा सकता है, पर उसमें मौलिक रचना के सौंदर्य की रक्षा नहीं की जा सकती (Translation of a literary work is as tasteless as a stewed strawberry - Harry De F. Forest Smith)। सिडनी-जैसे आलोचकों का मत है कि केवल विचारों का अनुवाद किया जा सकता है, शब्दों और उनके साहचर्यों का नहीं (Ideas can be translated but not the words and their Associations - Sydney)।

अनुवाद के प्रति इस प्रकार की धारणाएं काव्य (Poetry) के प्रति गहरी निष्ठा रखने वाले लोगों की रही हैं। इसके अतिरिक्त, धार्मिक कट्टरपंथी लोग अपने विशेष पूर्वाग्रहों के कारण बाइबिल-जैसे धर्मग्रंथों और धार्मिक रचनाओं के अनुवाद को ईश्वर की वाणी के साथ छेड़छाड़ और पाप समझते हैं। जॉर्ज स्टीनर (George Steiner) ने 'आफ्टर बेबल' (After Babel) में इसी धारणा का उल्लेख किया है, यथा -

"Where such speech is authentic, there must be translation. He, who has been in Christ and has heard unspeakable words - 'arcane verbal' - shall not utter them in mortal idiom. Translation would be blasphemy."

इस प्रकार के कट्टरपंथी लोग शब्दानुवाद (Literal translation) के समर्थक थे और वे भावानुवाद को पाप समझते थे।

2. आधुनिक दृष्टिकोण (Modern Approach)

ज्ञान-विज्ञान के प्रसार तथा नई-नई प्रौद्योगिकी के विकास से आज विश्व का मानव समाज निकटतर होता जा रहा है। उपग्रह प्रणाली के विकास से विश्व के किसी एक स्थान पर घटित घटना कुछ ही क्षणों में विश्व के किसी भी कोने में पहुंच जाती है। भाषिक दूरियां अब नहीं रहीं। यह ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे मौलिक चिंतन की बढ़ती मांग के कारण संभव हुआ है। विकसित देशों में जहां प्रौद्योगिकी, सूचना तंत्र, उपग्रह प्रणाली और आर्थिक विकास अपनी चरम सीमा पर हैं वहां अनुवाद और अनुवादक को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। शिक्षा के प्रचार-प्रसार तथा विश्व में हो रहे नवीन चिंतन को जल्दी-से-जल्दी आत्मसात् करने की मनुष्य की लालसा और जिज्ञासा ने आज भाषा के आदान-प्रदान के महत्व को बढ़ा दिया है। इसी से अनुवाद के प्रति चले आ रहे परंपरागत दृष्टिकोण में अब परिवर्तन आ गया है।

आधुनिक दृष्टिकोण अब अधिक उदार और वैज्ञानिक हो गया है। नोबल पुरस्कार विजेता अंग्रेजी उपन्यासकार 'विलियम जेरॉल्ड गोल्डिंग' के अनुसार -

"A book can never be translated perfectly, it can only be translated adequately and the translations are better than the book occasionally." - Indian Express, March 7, 1987 (अर्थात सर्वांगपूर्ण अनुवाद भले ही न हो सकें, पर अच्छे अनुवाद किए जा सकते हैं और कभी-कभी वे मूल से भी बेहतर होते हैं।) एलेक्जेंडर पोप (Alexander Pope) द्वारा किए गए 'होमर' के महाकाव्यों - 'इलियड' और 'ओडेसी' के अनुवाद के बारे में भारतीय मनीषी श्री अरविंद ने यह टिप्पणी दी है - "First class original poems with a borrowed substance from a great voice of the past."

उपर्युक्त दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के लिए, अनुवाद के कुछ मान्य सिद्धांतों का संक्षिप्त परिचय देना आवश्यक है। अनुवाद के कुछ मान्य सिद्धांत इस प्रकार हैं :-

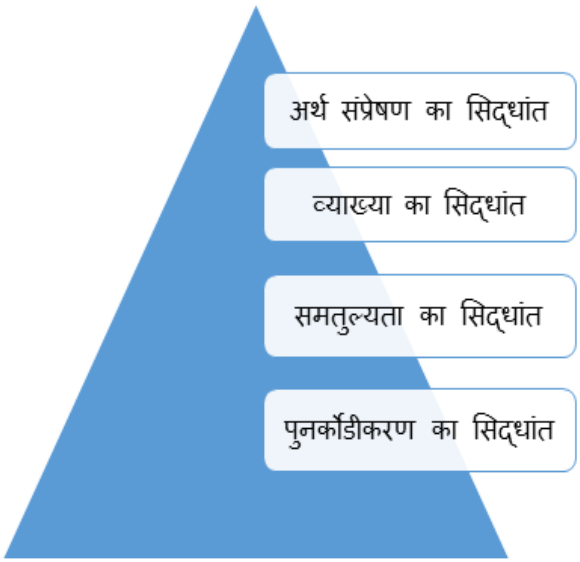

2.1 अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत (Theory of Communicability)

अनुवाद में अर्थ के संप्रेषण पर विशेष बल देने वाले विद्वानों में डॉ. जॉनसन (Dr. Johnson) ने अर्थ के संप्रेषण को महत्वपूर्ण बताया है। उनकी परिभाषा से यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है- "To translate is to change into another language retaining the sense." इस परिभाषा में इस बात पर विशेष बल दिया गया है कि "मूल के अर्थ को बनाए रखते हुए किसी अन्य भाषा में अंतरण करना अनुवाद है।" अर्थ के अध्ययन में भाषा की पहली इकाई 'शब्द' है। शब्द को सस्यूर ने भाषिक प्रतीक (Linguistic symbol or sign) की संज्ञा दी है। एक ही भाषा के भाषिक प्रयोगों में शब्द के अर्थ का विस्तार और संकोच - दोनों संभव हैं, तो किसी अन्य भाषा में इस विचलन (deviation) से कैसे बचा जा सकता है। इसलिए अनुवाद करते समय भाषिक प्रतीकों (शब्दों) की सूक्ष्म अर्थच्छटाओं की दूसरी भाषा में पूर्ण अभिव्यक्ति

नहीं हो पाती। अतः सभी प्रकार के अनुवाद कार्य में मूल के अर्थ का कुछ-न-कुछ प्रभाव नष्ट हो जाता है। अंग्रेजी साहित्य के आधुनिक आलोचक ए. एच. स्मिथ ने डॉ. जॉनसन की परिभाषा में इसी दृष्टि से आंशिक संशोधन किया है। उनके अनुसार अनुवाद से तात्पर्य है - मूल के अर्थ को यथासंभव बनाए रखते हुए किसी अन्य भाषा में उसका अंतरण करना ("To translate is to change into another language retaining as much as of the sense as one can.")। विद्वान कमोबेश इस पर एकमत हैं कि अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ की कुछ-न-कुछ हानि अवश्य होती है और अर्थ की इस हानि का कारण है - दो भिन्न-भिन्न भाषाओं की भाषिक व्यवस्था, व्याकरण, शब्दावली और पदावली, वाक्य संरचना, मुहावरे, सामाजिक और सांस्कृतिक परंपरा आदि में विभिन्नता का होना। इसलिए, अनुवाद में भाषिक प्रवाह और संरचनात्मक सीमाओं के कारण अत्यानुवाद (over translation) और अल्पानुवाद (under translation) की संभावना बनी रहती है। उपर्युक्त सीमाओं और वैचारिक भिन्नता के बावजूद विद्वज्जन अनुवाद में अर्थ के महत्व पर एकमत हैं। Dr. Johnson ने अर्थ संप्रेषण के महत्व पर प्रकाश डालते हुए अनुवादक पर बड़ी जिम्मेदारी डाली है, यथा-"Words are not independent entities, they have associations and connotations. From among the many possible symbols, the translator will have to choose an appropriate symbol for communicating the meaning."

2.2 व्याख्या का सिद्धांत (Theory of Interpretation)

कुछ विद्वानों ने अनुवाद को मूलतः व्याख्या माना है। इस मत के समर्थक विद्वान शैली प्रधान साहित्य (literature of power) के अनुवाद में व्याख्या की क्षमता और सामर्थ्य वाले विद्वान को ही काव्य का अनुवाद करने का अधिकारी मानते हैं। Roman Jacobson के अनुसार, "translation proper or interlingual translation is an interpretation of verbal signs by means of signs in some other language." अर्थात अनुवाद एक भाषा के शाब्दिक प्रतीकों की दूसरी भाषा के शाब्दिक प्रतीकों द्वारा व्याख्या है। चूंकि शैली प्रधान साहित्य (काव्य, नाटक, आदि) का रचनाकार महान उद्देश्य और अद्भुत कल्पना शक्ति के साथ भाषिक प्रतीकों का प्रयोग करता है, अतः मूल रचना में प्रयुक्त प्रतीकों का दूसरी भाषा में अंतरण उसकी कल्पनाशील व्याख्या के बिना संभव नहीं है। विधि, वाणिज्य, चिकित्सा आदि विषयों पर आधारित ज्ञान प्रधान साहित्य में तकनीकी शब्दों की व्याख्या उनके अभिप्रेत अर्थ को जानने के लिए आवश्यक प्रतीत होती है। शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद में अनुवादक से व्याख्यापरक अंतरण (interpretative transfer) करने की अपेक्षा की जाती है। अनुवादक का सर्जनशील होना उसकी अनिवार्य शर्त है, तभी वह उस साहित्यिक पाठ (literary text) की संकल्पना को ठीक से समझ सकता है। यही कारण है कि एक ही पाठ के दो अनुवादकों द्वारा किए गए अनुवादों में भिन्नता पाई जाती है। इससे यह भी सिद्ध होता है कि अनुवादक उस सामग्री की व्याख्या करता है। रूसी लेखिका E. M. Mednikova ने जहां इस सिद्धांत के समर्थन में यह कहा है कि - "Translation is a way of commenting", वहीं James Holmes ने इसे "all translation is an act of critical interpretation" की संज्ञा दी है।

व्याख्या के सिद्धांत का सबसे बड़ा दोष यह है कि व्याख्या करते समय अनुवादक मूल से दूर जा सकता है, जिससे मूल पाठ के अर्थ, संदेश और उसके पाठक पर पड़ने वाले प्रभाव के साथ न्याय नहीं हो पाता। Dr. Johnson ने ठीक ही कहा है - "translator is to be like his author, it is not his business to excel him.", अर्थात अनुवादक को लेखक से आगे बढ़ने का प्रयास नहीं करना चाहिए। व्याख्या से मूल का भाषांतरण (version) तो संभव है, अनुवाद नहीं।

2.3 समतुल्यता का सिद्धांत (Theory of Equivalence)

अनुवाद में दो भाषाओं की संरचना की समतुल्यता के सिद्धांत का प्रतिपादन सर्वप्रथम प्रसिद्ध भाषाविज्ञानी Prof. J.C. Catford ने अपनी पुस्तक Linguistic Theory of Translation में किया है। उन्होंने अनुवाद को इस रुप में परिभाषित किया है - "Translation is the replacement of textual material in one language (SL) by equivalent textual material in another language (TL)", अर्थात, "अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का लक्ष्य भाषा की समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन है।" उन्होंने textual material (पाठ्य सामग्री) और Translation equivalence (अनुवाद समतुल्यता) पदों को स्पष्ट करते हुए तथा भाषा के विभिन्न स्तरों यथा- स्वनिम (Phonology), लेखिम (graphology), व्याकरण और शब्द (grammar and lexis) को महत्व देते हुए, भाषा के बाह्य रूप और उसके सूक्ष्म स्तरों का विशद विवेचन किया है। यद्यपि Catford ने अर्थ को गौण नहीं माना है, किंतु उन्होंने भाषा के रूप तत्व (structural forms) को अर्थ की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। इससे अनुवाद की प्रक्रिया को समझने के लिए भाषा वैज्ञानिक आधार मिला है और दो भाषाओं की संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन तथा व्यतिरेकी विश्लेषण का मार्ग प्रशस्त हुआ है, किंतु अर्थ गौण हो गया है। इसकी तुलना में, नाइडा का चिंतन अधिक व्यापक और गहन सिद्ध हुआ है।

2.3.1 अर्थ और शैली की समतुल्यता (Equivalence in Meaning and Style)

अनुवाद के क्षेत्र में, नाइडा द्वारा प्रतिपादित अर्थ और शैली की समतुल्यता का सिद्धांत व्यापक स्तर और बड़े पैमाने पर स्वीकृत आधुनिक सिद्धांत है। नाइडा ने अनुवाद में अर्थ के महत्व के साथ-साथ रचनाकार की शैली को भी महत्वपूर्ण माना है। उनके अनुसार, अनुवादक को दोहरी भूमिका (Two-fold task) निभानी होती है, यथा - (i) उसे मूल पाठ (original text) के अर्थ को ठीक-ठीक अंतरित करना होता है, और (ii) उसे पाठक के लिए मूल पाठ के संदेश की ताजगी (Flavour) भी संप्रेषित करनी होती है। Nida के शब्दों में - "Translating consists in producing in the receptor language the closed natural equivalent to the message of the source language, first in meaning and secondly in style." नाइडा की इस परिभाषा में अनुवाद की पूर्ण संप्रेषण प्रक्रिया (total communication process) का चिंतन प्रकट हुआ है। नाइडा के चिंतन में यह तथ्य स्पष्ट रुप से उभर कर आया है कि दो

भाषाओं की संरचना, व्याकरण, शब्द-संयोजन आदि एक समान नहीं हो सकते और इसलिए किसी एक भाषा की सामग्री का दूसरी भाषा में पूरी तरह अनुवाद करना संभव नहीं है। इसीलिए नाइडा ने निकटतम सहज समतुल्य (Closest natural equivalent) की संकल्पना दी है। अनुवाद मूल का निकटतम ही हो सकता है, उसमें मूल की सभी बारीकियां नहीं आ सकतीं। नाइडा ने इसकी व्याख्या करते हुए आगे कहा है -

"There can be no absolute correspondence between two languages. Hence, there can be no fully exact translation. The total impact of a translation may be reasonably close to the original but there can be no identity of detail."

नाइडा ने निकटतम समतुल्य (closest equivalent) शब्द की व्याख्या करते हुए कहा है कि वह अपनी मूल्यवत्ता, महत्ता या उत्तमता में मूलरचना के समान होता है (equal in value, amount or worth)।

नाइडा ने अर्थ और शैली - दोनों को महत्व देते हुए भी अर्थ की प्रधानता को स्वीकार किया है - "as has already been indicated in the definition of translating, meaning must be given priority….. though style is secondary to content, it is nevertheless important."

2.3.2 समतुल्यता के प्रकार (kinds of Equivalence)

भाषिक अभिव्यक्तियों में पाई जाने वाली समानताओं और विषमताओं, विषयगत अपेक्षाओं और शैलीगत आधारों को ध्यान में रखते हुए, नाइडा ने निम्नलिखित दो प्रकार की समतुल्यता का उल्लेख किया है :

(i) रूपात्मक समतुल्यता (Formal Equivalence)

रूपात्मक समतुल्यता की उपयोगिता ज्ञान प्रधान साहित्य (literature of knowledge) में अधिक होती है। इस समतुल्यता के निर्धारण में अनुवादक स्रोत भाषा के भाषिक तत्वों (व्याकरण, पद, क्रिया, विशेषण, सर्वनाम, संज्ञा आदि) का लक्ष्य भाषा के भाषिक तत्वों के साथ प्रतिस्थापन करता है। अनुवादक वाक्य-विन्यास में परिवर्तन नहीं करता। यहां तक कि वह शब्दों की संख्या, छंद आदि को भी ज्यों-का-त्यों रखने का प्रयास करता है तथा सामाजिक- सांस्कृतिक संदर्भों का लिप्यंतरण कर उन्हें पाद टिप्पणियों (footnotes) में स्पष्ट करता है।

(ii) गत्यात्मक समतुल्यता (Dynamic Equivalence)

गत्यात्मक समतुल्यता में अनुवादक स्रोत भाषा से अर्थ ग्रहण करने के पश्चात इस बात पर बल देता है कि स्रोत भाषा के कथ्य को लक्ष्य भाषा में कैसे कहा जाए, ताकि मूल रचना के विषयगत अर्थ और उसकी शैली को लक्ष्य भाषा में भाषाई प्रवाह, प्रभाव और ताजगी के साथ संप्रेषित किया जा सके। इस प्रकार गत्यात्मक अनुवाद "समतुल्य प्रभाव के सिद्धांत" (Principle of equivalent effect) पर आधारित है। गत्यात्मक अनुवाद अधिक सहज, पठनीय और

समतुल्य प्रभावकारी होता है। पाठक को यह आभास नहीं होता कि वह मूल रचना के बजाय कोई अनूदित रचना पढ़ रहा है।

नाइडा ने इस सहजता को इस प्रकार कहा है- "By 'natural' we mean that the equivalent forms shall not be 'foreign' either in form (except of course for such inevitable matter as proper names) or meaning. That is to say a good translation should not reveal its non-native source."

2.4. पुनर्कोडीकरण का सिद्धांत (translation is recodification)

इस सिद्धांत का प्रतिपादन अमरीकी भाषा वैज्ञानिक विलियम फ्राउले (William Frawley) ने किया है। उनके अनुसार, अनुवाद पुनर्कोडीकरण की प्रक्रिया है (Translation means recodification)। इसमें दो कोड होते हैं - (1) Matrix code अर्थात स्रोत भाषा का कोड और (2) Target code अर्थात लक्ष्य भाषा का कोड। उनके अनुसार, स्रोत भाषा के कोड की सूचना को उठाकर लक्ष्य भाषा के कोड में रख देना मात्र अनुवाद नहीं है। स्रोत भाषा का कोड अनुवादक को भाषिक और विषयगत सूचनाएं उपलब्ध कराता है। अनुवादक उनका मिलान (comparison) लक्ष्य भाषा के कोड में उपलब्ध भाषिक और विषयगत सूचनाओं से करता है तथा लक्ष्य भाषा के पैरामीटर में जितनी सूचनाएं मेल खाती हैं, उस सीमा तक वह उनका अंतरण करता है।

फ्राउले का मानना है कि दो भाषाओं की व्याकरणिक संरचनाएं भिन्न होती हैं, शब्दों के सांदर्भिक अर्थ (referential meaning) और उनकी संकल्पनाएं (concept) भिन्न होती हैं, इसलिए स्रोत भाषा के कोड की सभी सूचनाएं लक्ष्य भाषा के कोड में अंतरित नहीं की जा सकतीं। इसलिए, अनुवाद में समरूपता (identity) आंशिक रूप से ही संभव है। फ्राउले के अनुसार, अनुवादक को स्रोत भाषा के कोड में उपलब्ध सूचनाओं को लक्ष्य भाषा के कोड की सीमाओं में तालमेल बैठाकर पुनः कोडीकरण (recodification) करना चाहिए, जोकि अनूदित नया कोड (new code) होगा। इसे निम्नलिखित रेखाचित्र द्वारा देखा जा सकता है -

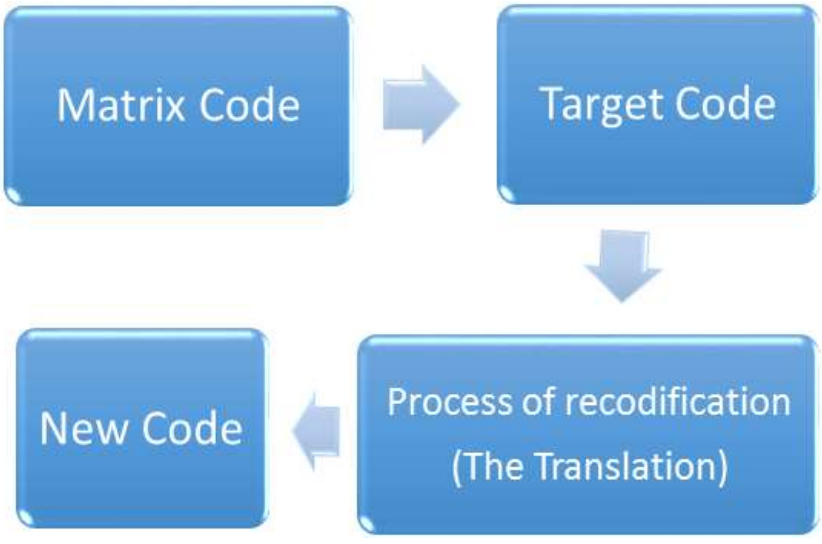

फ्राउले की उपर्युक्त अवधारणा से अनुवाद की यह महत्वपूर्ण स्थापना सामने आई है कि अनुवाद मूल सामग्री के कथ्य की लक्ष्य भाषा में पुनर्संरचना (restructuring) नहीं होता, बल्कि वह उसका पुनर्सृजन (re-creation) होता है। अनुवादक नया कोड (new code) सृजित करते समय, अनुवाद में लक्ष्य भाषा की प्रकृति और अभिव्यक्ति की स्वाभाविकता (flow) को बनाए रखने का प्रयास करता है। अनुवाद प्रक्रिया कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि उसमें मौलिकता का स्पर्श होता है।

निष्कर्ष

अनुवाद सिद्धांत संबंधी उपर्युक्त विवेचन के आधार पर, निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद मूल रचना की अर्थरूपी आत्मा को उसकी संपूर्ण समग्रता के साथ, लक्ष्य भाषा में अंतरित करने की एक रचनात्मक साहित्यिक विधा है। वह अंतरण की कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं, बल्कि मौलिकता से स्पर्श करता हुआ कृतित्व है। उसके एक ओर मूल लेखक होता है और दूसरी ओर अनुवादक। मूल लेखक और अनुवादक- इन दोनों बिंदुओं के बीच स्थित रहती है - अनुवाद की प्रक्रिया। एक कुशल अनुवादक स्वयं को मूल लेखक की भाव-भूमि में प्रतिष्ठित कर, अपनी अंतर्दृष्टि और प्रतिभा के बल पर मूल रचना की विषय वस्तु को लक्ष्य भाषा में इस रचनात्मक कौशल के साथ प्रस्तुत करता है कि उसमें मूल रचना की अर्थ रूपी आत्मा के साथ-साथ उसकी शैली का अंदाज भी समाहित हो जाए, जिससे कि उसका कृतित्व - अनुवाद मौलिक रचना के स्तर तक पहुंच सके। दूसरे शब्दों में, उसका अनुवाद भाषांतर प्रतीत न हो, बल्कि उसमें मौलिक रचना- जैसी आस्वादनशीलता हो।